**MATTERS RAISED WITH PERMISSION**

**Need for timely payment of compensation and waiving of loan taken by the father of the children who have been orphaned in serial bomb blasts which took place In Delhi on 29th October, 2005**

**श्री एस0एस0 अहलुवालिया** ( झारखंड): सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से सदन का और सदन के माध्यम से सरकार का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं । 29 अक्टूबर को, दीवाली से सिर्फ दो दिन पहले, एक काली दीवाली की अवस्था बन गई- दिल्ली में serial blasts हुए , जिसमें करीब 60 लोग मारे गए, 220 घायल हुए है 8 आज तक लापता है। उनकी लाशों का कहीं पता नहीं लगा है। महोदय, इसमें कितने परिवार उजड़ गए, उसमें खासकर एक परिवार है, जिसकी बच्ची रानिया है, जिसकी उम्र 13 साल है और जिसका भाई हार्दिक है, जिसकी उम्र 10 साल है।

महोदय, इनके मां-बाप दोनों ही इसी हादसे में मारे गए। राजीव निगम पिता जी तो स्पॉट डेड हो गए, और वीना निगम की भी दस दिन बाद इंजरी के कारण डेथ हो गई । महोदय, 26 नवम्बर को जवान पुत्र और पुत्रवधु की मौत के कारण बच्चों के ग्रैंड फादर का भी देहांत हो गया और परिवार में कोई नहीं रहा, केवल ये दो बच्चे हैं। पिताजी ने यह संजोकर अपना सपनों का घर बनाने की कोशिश की थी और एचडीएफसी बैंक से सात लाख रुपए लोन लिए थे। आज उन पर तो एक अपार मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा है। उनके सिर से मां –बाप का साया उठ गया है, ग्रैड फादर का साया उठ गया है। वे इस वक्त स्कूल में कैसे जाएं और कौन किस को मनाएं। उनके रिश्तेदार आते है और चले जाते है। सरकार ने घोषणा की थी कि उनको पेन्सेशन मिलेगा, लेकिन आज की डेट तक उनको कंपेन्सेशन नहीं मिला है दूसरी तरह उनके पिता जी ने सिर्फ सात लाख कर्जा अपना घर बनाने के लिए एचडीएफसी बैंक से लिया था, एचडीएफसी बैंक के मैनेजर बार-बार उनके घर पर दस्तक दे रहे हैं कि पैसा दो नहीं तो जमीन जब्त कर लेंगे। महोदय, मानव भावना और ह्यूमैनिटेरियन की वेल्यूज क्या इस देश में मर चुकी है? जबकि उस वक्त सरकार की तरफ से राष्ट्र में बडी-बडी घोषणाएं हुई, बहुत से एनजीओज की तरफ से हुई, बहुत सी स्वयं सेवी संस्थाओं की तरफ से हुई और बहुत सी धार्मिक की ओर से हुई, प्रार्थानाएं हुई और सब कुछ हुआ। आज ये जो बच्चे गुहार कर रहे है,ये कल टी.वी. पर कह रहे थे कि कोई भी उनकी मदद करने नहीं आ रहा है। ये डीएवी स्कूल में पढ़ते है। उनकी फीस माफ की गई है, लेकिन उनकी फीस माफ करने की चिट्ठी नहीं दी गई है। अब पता नहीं उनसे किस वक्त फीस मांग ली जाए और स्कूल जाना भी बंद हो जाएगा।

**श्री सभापति:** ठीक है, ठीक है।

**श्री एस. एस. अहलुवालियाः** महोदय , मैं आपके माध्यम से सरकार से मांग करना चाहूंगा और मैं समझूंगा कि इस पर सदन पूरा समर्थन करेगा कि ह्यूमैनिटेरियन ग्राउंड पर , सिम्पेथेटिकली इसको कंसिडर जाए और ....(**व्यवधान**)...

**श्री सभापति :** ठीक है, ठीक है।

**श्री एस. एस. अहलुवालिया :** इनका कर्जा माफ किया जाए। इनका जो कम्पनसेशन है, इसकी तुंरत पेमेंट की जाए। इन दोनों यतीम बच्चों के रख-रखाव के लिए सरकार जिम्मेदारी ले। ....(**व्यवधान**)...

**श्री सभापति :** बैठिए, बैठिए। ....(**व्यवधान**)... आप बोलने दीजिए। ....(**व्यवधान**)...

**श्री कलराज मिश्र** (उत्तर प्रदेश)**:** सरकार को इस पर निश्चित रुप से ध्यान देना चाहिए। ....(**व्यवधान**)...

**श्रीमती वृंदा कारत** (पश्चिमी बंगाल)**:** सर, सरकार कुछ आश्वासन दे। ....(**व्यवधान**)...

**श्री सभापतिः** आप सरकार को बोलने दीजिए। ....(**व्यवधान**)... सरकार बोले। ....(**व्यवधान**)... आप कोई मौका तो दो, ताकि मैं सरकार से कहूं।

कार्मिक, लोक शिकायत तथा पेंशन मंत्रालय मे राज्य मंत्री और संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री ( श्री सुरेश पचौरी) : मान्यवर, हमारे सम्मनित सदस्य ने यह जो विषय उठाया है, इससे पूरा सदन उद्वेलित है और यह एक मानवीय प्रकरण है। निस्सन्देह पूरे सदन की भावना से मैं माननीय वित्त मंत्री जी को इससे अवगत करा दूंगा। जहां तक इस प्रकरण का प्रश्न है, वित्त मंत्री जी से अभी हाल ही में मेरी चर्चा हुई है, वे इससे वाफिक है। उनका कथन यह था कि जो एचडीएफसी बैंक है, वह प्राइवेट बैंक है, फिर भी वे अपने गुड़ आफिस का उपयोग करते हुए यह सुनिश्चित करेंगे कि इस प्रभावित परिवार को, इन बच्चों को किसी ढ़ंग से समुचित मदद दिलाई जा सके।

**Reported cancellation of invitation to Shri Amitabh Bachchan as Chief Guest of the International Film Festival of India, held at Goa**

**श्री उदय प्रताप सिंह** ( उत्तर प्रदेश)**:** महोदय, मैं एक बहुत गंभीर मामला उठाना चाहता हूं। अभी गोवा में फिल्मोत्सव हुआ और उसमें मिलेनियम मैन श्री अमिताभ बच्चन को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया और फिर बिना कारण उस आमंत्रण को निरस्त कर दिया गया। उसमें कारण तो कुछ नहीं बताया गया, लेकिन कुछ अखबारों ने ....(**व्यवधान**)...

**श्री सभापति :** अखबारों को छोडिए।